भारत सरकार
पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय
राज्य सभा
अतारांकित प्रश्न संख्या 2131
07/08/2025 को उत्तर दिए जाने के लिए

भारत की नीली अर्थव्यवस्था के विकास से संबंधित चुनौतियाँ

2131 डा. भागवत कराड़ :

क्या **पृथ्वी विज्ञान** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) क्या सरकार ने भारत की नीली अर्थव्यवस्था को प्रभावित करने वाली प्रमुख चुनौतियों जैसे कमजोर तटीय अवसंरचना, सीमित समुद्री अनुसंधान, संसाधनों का अति प्रयोग और तटीय समुदायों के लिए आजीविका जोखिम की पहचान की है;

(ख) यदि हाँ, तो राष्ट्रीय नीली अर्थव्यवस्था नीति, सतत विकास लक्ष्य-14 और संयुक्त राष्ट्र महासागर विज्ञान दशक के अनुरूप क्या उपाय किए गए है;

(ग) क्या महासागर प्रशासन, निजी क्षेत्र की भागीदारी और क्षेत्रीय सहयोग को बढ़ावा देने के लिए कोई कदम उठाए जा रहे हैं; और

(घ) यदि हाँ, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है और कार्यान्वयन और योजना में तटीय राज्यों और हितधाराकों को किस प्रकार शामिल किया जा रहा है?

उत्तर
विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी तथा पृथ्वी विज्ञान राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार)
(डॉ. जितेंद्र सिंह)

(क) जी हाँ। पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय 'भारत की नीली अर्थव्यवस्था में ट्रांसफॉर्मिंग इंडियाज ब्ल्यू इकोनॉमी: इनवेस्टमेंट, इनोवेशन एंड सस्टेनेबल ग्रीन 'शीर्षक वाले श्वेत पत्र के माध्यम से भारत की नीली अर्थव्यवस्था प्रभावित करने वाली प्रमुख चुनौतियों की पहचान की है।

(ख) भारत की राष्ट्रीय नीली अर्थव्यवस्था नीति के मसौदे, एसडीजी-14 (जल के नीचे जीवन) और संयुक्त राष्ट्र महासागर विज्ञान दशक के अनुरूप कई रणनीतिक पहल शुरू की गई हैं। पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय का डीप ओशन मिशन का उद्देश्य समुद्री अनुसंधान को आगे बढ़ाना, गहरे समुद्र प्रौद्योगिकियों का विकास करना और सतत समुद्री संसाधन अन्वेषण करना है। इसी तरह, पत्तन, पोत परिवहन और जलमार्ग मंत्रालय (एमओपीएसडब्ल्यू) के सागरमाला कार्यक्रम तटीय अवसंरचना ढांचे और संभार तंत्र विकसित के लिए पत्तन-आधारित विकास पर केंद्रित है। मत्स्य पालन विभाग (डीओएफ) द्वारा प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना (पीएमएमएसवाई) विशेष रूप से सतत मत्स्य पालन और जलीय कृषि का बढ़ावा देने के लिए बनाई गई है। इसके अतिरिक्त पर्यावरण संरक्षण प्रयास जिन में तटीय सफाई अभियान और पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय (एमओईएफऔरसीसी) द्वारा संशोधित प्लास्टिक अपशिष्ट प्रबंधन नियम शामिल हैं।

(ग) जी हां।

(घ) भारत ने राष्ट्रीय क्षेत्राधिकार से परे जैव विविधता (बीबीएनजे) समझौते पर हस्ताक्षर करके महासागर संचालन को मजबूत किया है और समुद्री गतिविधियों के संबंध में अपने कानूनी और नियामक ढांचे को सक्रिय रूप से बढ़ा रहा है। पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय (एमओईएस) ने, नीली अर्थव्यवस्था क्षेत्र से जुड़े अन्य मंत्रालयों के साथ लक्षित कार्यशालाओं, निवेश नीतियों और सार्वजनिक-निजी भागीदारी (पीपीपी) जैसे तंत्रों से निजी क्षेत्र की भागीदारी को बढ़ावा देने के लिए कई पहलें की है। इसके अलावा, सरकार ने सागर, बहुपक्षीय समुद्री अभ्यास और हिंद महासागर रिम एसोसिएशन (आईओआरए) जैसे मंचों की सक्रिय भागीदारी जैसी पहल के माध्यम से क्षेत्रीय सहयोग की दिशा में काम किया है। राष्ट्रीय नीली अर्थव्यवस्था नीति मसौदे निर्माण में राज्य सरकार, स्थानीय समुदाय, वैज्ञानिक संस्थान, उद्योग प्रतिनिधियों और गैर-सरकारी संगठनों के इनपुट को शामिल करते हुए परामर्श शामिल थे। इसके अतिरिक्त, प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना (पीएमएमएसवाई) जैसे लक्षित कार्यक्रम सीधे मछुआरा समुदायों को जोड़ते हैं, जबकि तटीय पर्यटन और पर्यावरण रक्षण की पहलों के कार्यान्वयन और योजना में स्थानीय अबादी शामिल है।

*****